अमेरिकी बच्चों से गांठी दोस्ती

गिरिराज अग्रवाल

दिल्ली के सरकारी स्कूलों में अनूठी मुहिम

न्यूयॉर्क में 17 साल पहले शुरू हुआ एक प्रोग्राम अब भारत के अध्यापकों और छात्र-छात्राओं के लिए अमेरिका के लोगों की जीवनचर्या, रीति-रिवाजों, परंपराओं और मूल्यों को समझने का जरिया बन रहा है। 'कल्चर क्वेस्ट' नामक इस प्रोग्राम के तहत दिल्ली के 15 राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालयों के हजारों बच्चे और उनके शिक्षक अमेरिकी बच्चों और शिक्षकों के साथ सीधा संवाद कायम कर पा रहे हैं। 193 वेब कैमरों की मदद से इन बच्चों ने अमेरिकी समाज के विभिन्न पहलुओं के बारे में जाना और अमेरिकी बच्चों से दोस्ती गांठी। भारत में वर्ष 2002-03 में शुरू हुआ यह 'कल्चर क्वेस्ट' प्रोग्राम अब विस्तार की बाट जोह रहा है। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. आई. एस. सूरी के अनुसार इसे दिल्ली के सभी सरकारी स्कूलों तक फैलाने और वेब कैमरों की संख्या 930 तक ले जाने का इरादा है।

इस प्रोग्राम को भारत लाने में अहम भूमिका अदा करने वाले न्यूयॉर्क की सिटी यूनिवर्सिटी के सिटी कॉलेज के प्रोफेसर रवि कालिया कहते हैं, ''मैंने जब अमेरिका में इस प्रोग्राम के बारे में जाना तो मुझे भारत का ध्यान आया। भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था के दौर से रूबरू है और ऐसे में यदि छात्र-छात्राएं दूसरे देशों की संस्कृति से परिचित हों तो यह बेहतर है।'' वह कल्चर क्वेस्ट में ग्लोबल क्लासरूम की संभावना देखते हैं। भारत में कल्चर क्वेस्ट प्रोग्राम को अमल में लाने में सिटी कॉलेज की डॉ. शीला गर्श ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और वह इस सिलसिले में कई बार भारत आ चुकी हैं। उनके अनुसार, ''यह प्रोग्राम बच्चों में दूसरे देशों के प्रति सकारात्मक रवैया विकसित करता है। उनमें सहिष्णुता बढ़ती है।'' कल्चर क्वेस्ट भारत में शुरू करने के लिए अमेरिकी इंडियन फाउंडेशन ने शुरुआती 25 हजार डॉलर का योगदान किया।

कल्चर क्वेस्ट के तहत स्कूलों में कंप्यूटर और इंटरनेट की सुविधा मुहैया कराई गई। विभिन्न स्कूलों के 28 शिक्षकों को इसके लिए प्रशिक्षित किया गया है और अब ये शिक्षक अन्य शिक्षकों को प्रशिक्षण देकर इस प्रोग्राम का विस्तार करने में मदद कर रहे हैं। पिछले चार साल में हजारों भारतीय और अमेरिकी बच्चों ने ई-मेल और वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये अपने अनुभव बांटे और एक-दूसरे से दोस्ती की। कल्चर क्वेस्ट प्रोग्राम के तहत अमेरिका होकर आए सूरजमल विहार राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय के शिक्षक भरत ठाकुर कहते हैं, ''सिर्फ अपनी पढ़ाई-लिखाई की चिंता करने वाले और एक दायरे तक सीमित रहने वाले बच्चों के लिए इस बात पर यकीन करना मुश्किल था कि उनका सरकारी स्कूल उन्हें अमेरिकी बच्चों से बातचीत का अवसर मुहैया करा रहा है।'' न्यूयॉर्क के ब्रेंडाइस हाई स्कूल के अनुभव के आधार पर वह कहते हैं, ''वहां कल्चर क्वेस्ट के समय हर बच्चे के पास अपना लैपटॉप होता है जबकि हमारे स्कूल में सिर्फ दो कंप्यूटर है। उनमें भी डायल अप कनेक्शन है। कनेक्टिविटी पूरी हो तो प्रोग्राम गति पकड़े।''

कल्चर क्वेस्ट की जो बात बच्चों को सबसे ज्यादा भाती है, वह संदेशों का तुरत-फुरत आदान-प्रदान और दूसरे देशों के अपने दोस्तों को खुद से संवाद करते हुए देखने का सुख। त्यागराज नगर स्कूल के के संदीप ढौंढियाल ने अमेरिका के केविन को अपना दोस्त बनाया है। दोनों को एक-दूसरे के साथ बातचीत करना इतना अच्छा लगता है कि वे एक-दूसरे को पक्के दोस्त मानने लगे है। सूरजमल विहार की इला वार्ष्णेय और उनके साथियों ने इस प्रोग्राम के दौरान अपने अमेरिकी दोस्तों से मार्टिन लूथर किंग जूनियर के बारे में जानकारी ली और उनके प्रसिद्ध भाषण 'आई हैव ए ड्रीम' की रिकॉर्डिंग सुनी। अमेरिकी बच्चों में भी भारत के बारे में जानने की लालसा कम नहीं थी। ल्यूक टॉड भारत में बढ़ती जनसंख्या के बारे में जानने को उत्सुक थे तो स्टानिलिन डियाज की दिलचस्पी भारत के खानपान के बारे में जानने की थी।

दिल्ली में इस प्रोग्राम के समन्वयन का जिम्मा राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी) ने संभाला। एससीईआरटी के निदेशक डॉ. एम. सी. माथुर और कल्चर क्वेस्ट के समन्वयक डॉ. आई. एस. सूरी के अनुसार उन लोगों ने इस प्रोग्राम को इस तरह से संचालित करने का प्रयास किया है कि छात्रों की किताबी पढ़ाई प्रभावित न हो। या तो छात्रों को कंप्यूटर की कक्षा के दौरान इसके लिए प्रेरित किया गया या फिर स्कूल में पढ़ाई की अवधि समाप्त होने के बाद इसके लिए समय निकाला गया। इससे बच्चों के माता-पिता को राजी करना आसान हो गया।

दिल्ली के शिक्षा निदेशक विजय कुमार कहते हैं, ''कल्चर क्वेस्ट के उत्साहजनक नतीजों के बाद अब दिल्ली सरकार इसे अमेरिका के अलावा चीन, जापान, आस्ट्रेलिया और रूस जैसे देशों के साथ भी बढ़ाने की योजना बना रही है। इंटरनेट माध्यम से संपर्क के साथ ही छात्र-छात्राओं में भौतिक मेलजोल पर भी जोर दिया जाएगा।'' प्रोफेसर कालिया कहते हैं, ''भारत के सरकारी स्कूलों के प्रतिभावान बच्चे कल्चर क्वेस्ट से अपना दायरा बढ़ा पाएंगे।''

कल्चर क्वेस्ट की अवधारणा साधारण लगती है लेकिन प्रोग्राम पर ठीक से अमल होने पर इसके नतीजे व्यापक और दूरगामी हो सकते हैं। डॉ. सूरी कहते हैं, ''जब वेब कैमरों की संख्या 900 से ज्यादा हो जाएगी तो करीब पांच लाख स्कूली बच्चे इस प्रोग्राम से सीधे-सीधे प्रभावित होंगे।'' □

साभार भरत ठाकुर

साभार डॉ. शीला गर्श

ऊपर: वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये अमेरिकी बच्चों से बातचीत
बाएं: दिल्ली में कल्चर क्वेस्ट में भाग लेने वाले बच्चों और अध्यापकों के साथ न्यूयॉर्क के सिटी कॉलेज की डॉ. शीला गर्श।